कुतबुद्दीन ऐबक की उपलब्धियाँ :—

वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा भी उसकी स्थिति सुदृढ़ हुई। ऐबक इल्तुतमीश से हुआ था। उसके इस घोर संघर्ष से बदायूं का शासक बनाया गया। कुबाचा ने ऐबक से अपनी बहन का विवाह करवाया था। इस कारण से कुबाचा की ओर तत्काल कोई समस्या का समस्या का सामना न करना पड़ा।

*. यल्दूज का दमन और गज़नी से सम्बन्ध विच्छेद :
मोहम्मद गौरी के 3 सेनापतियों में से एक यल्दूज जो गज़नी का शासक बनने में सफल हो गया था, ऐबक को भी अपनी अधीन मानता था। 1208 में यल्दूज ने मुल्तान पर आक्रमण कर अपना अधिकार कर लिया। ऐबक और उसके सैनिकों ने प्रति गज़नी निवासियों के असन्तोष का लाभ उठाकर यल्दूज गज़नी वापस प्राप्त करने में ~~असफल~~ सफल रहा। गजनी पर ऐबक का कब्जा 40 दिनों तक रहा। ऐबक को गजनी अभियान का सबसे बड़ा लाभ यही मिला कि भारत का गजनी से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। यल्दूज को भी ऐबक की शक्ति का पता चल गया। ऐबक को स्वतंत्र अस्तित्व का पता चल गया।

*. बंगाल अलीमर्दन द्वारा अधीनता स्वीकार :
मुहम्मद बख्तीर खलजी के मृत्यु के बाद अलीमर्दन खाँ खलजी/खलजी बंगाल का स्वतंत्र शासक बना। खलजी सरदारों के आपसी संघर्ष के फलस्वरूप अलीमर्दन भागकर ऐबक की शरण में आया। ऐबक के प्रतिनिधी कैमेज रूमी की मदद से अलीमर्दन को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया गया। उसने ऐबक की अधीनता स्वीकार की।

* राजपूत सम्राज्य पर अधिपत्य :
गजनी तथा बंगाल की समस्याओं में अधिक व्यस्त रहने से ऐबक को राजपूतों पर दबाव डालने का समय नहीं मिल सका। कालिंजर था ग्वालियर पुनः जीतने की योजना नहीं बन सकी।

*. निर्माण कार्य :
दिल्ली की "कुवत-उल-इस्लाम" मस्जिद तथा अजमेर की "ढाई दिन का झोपड़ा" मस्जिद के निर्माण कार्य का श्रेय कुतुबुद्दिन ऐबक को जाता है। प्रसिद्ध कुतुब मीनार के निर्माण का कार्य भी ऐबक ने शुरू किया था। तीनों ईमारतों के विस्तार एवं पूरा करने का श्रेय इल्तुतमिश को है।